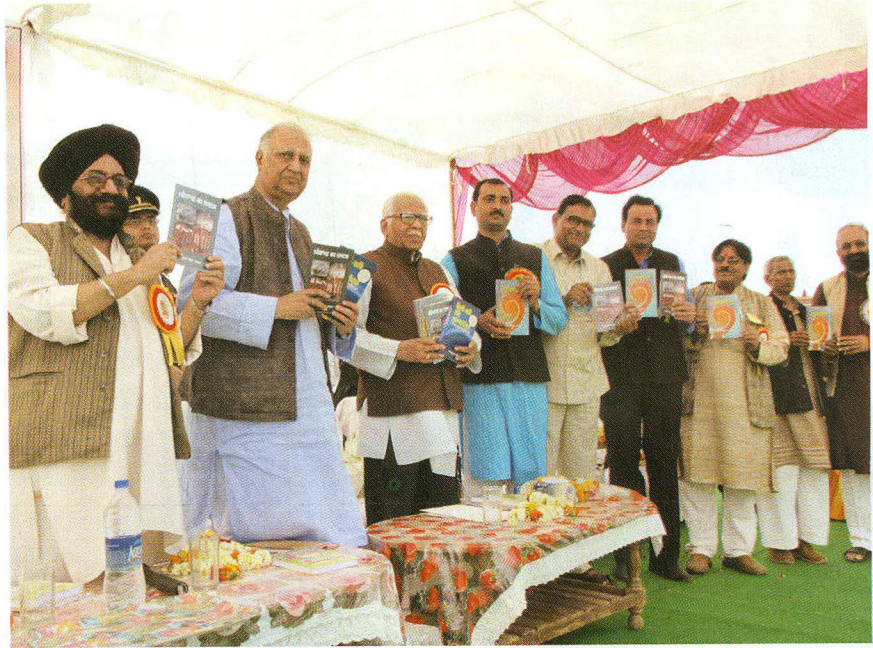


## टर्निंग इंडिया नेटवर्क

**रा**मकथा के अमर गायक काकभुशुण्डि के तपस्यास्थल, आदिमानवों के आश्रयस्थल, शैलचित्रों की अनन्त राशि से अलंकृत, मध्यकालीन मूर्तिवैभव से मण्डित, अगोरी-बड़हर नरेश बाल शाह के द्वितीय पुत्र बाबू गजराज सिंह द्वारा सन् 1690 ई. में स्थापित इतिहास प्रसिद्ध देवगढ़ ताल्लुका की अस्मिता के आख्यान को पुनरुज्जीवित करने के संकल्प के साथ भक्तहृदया महीयसी प्रभा सिंह की जयन्ती के उपलक्ष्य में 2013-14 मार्च, 2015 को उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक के मुख्यातिथ्य एवं न्यायमूर्ति पण्डित गिरिधर मालवीय के सभापतित्व में 'देवगढ़ महोत्सव' का द्विदिवसीय अनुष्ठान सम्पन्न हुआ.

प्रभारी ग्रामोदय सेवा आश्रम देवगढ़ द्वारा आयोजित 'देवगढ़ महोत्सव' के प्रथम सत्र में



# राज्यपाल ने किया पुस्तकों का लोकार्पण

## 'प्रभाश्री सम्मान' से अलंकृत हुए विद्वतजन

अपने अपने क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु प्रो. कृष्णबिहारी पाण्डेय, प्रो. पंजाब सिंह, डा. पृथ्वीराज सिंह, प्रो. पी.एन. मिश्र, डा. बी.एल. मल्ला, डा. राजेश पुरोहित, डा. सी.एम. नैटियाल, डा. इन्द्राणी चट्टोपाध्याय, शिवनारायण निर्मोही, डा. दयाशंकर पाठक, डा. नरेश कात्यायन, गौरवकृष्ण बंसल, डा. शक्ति कुमार पाण्डेय, प्रो. ओमपाल सिंह 'निडर', डा. महेन्द्र सिंह तोमर, सतीशचन्द्र शुक्ल 'भावुक', पद्मकान्त शर्मा 'प्रभात', डा. कैलाशपति त्रिपाठी, रोहित प्रधान, वी.एस. सूर्यनारायण, डा. आर.पी. नारायण, डा. शिवनारायण कुरील एवं डा. श्यामप्यारी जायसवाल को महामहिम राज्यपाल श्री राम नाईक ने 'प्रभाश्री सम्मान' से अलंकृत किया. इसी क्रम में भारत के वर्तमान राष्ट्रकवि डा. बृजेश सिंह को इक्यावन हजार रुपये की सम्मान राशि के साथ 'बाबू जगन्नाथ प्रसाद भानुकवि नामित सम्मान' प्रदान किया गया.

राष्ट्ररूपि नानाजी देशमुख की परिकल्पना के अनुसार देवगढ़ ग्रामसभा के समग्र विकास हेतु अशोक कुमार सिंह, परदेशी कोल, विजय भारती, श्यामलाल कोल, सुरसत कोल, प्रभाशंकर सिंह, अरविन्द कुमार, बबून कोल एवं राजेश कुमार का 'ग्राम शिल्पी' के रूप में राज्यपाल

राम नाईक के द्वारा मनोनयन किया गया. इस अवसर पर महामनीषी पं. राजनाथ मिश्र के महाकाव्य 'अभयजीवनपथ' डा. जितेन्द्र कुमार सिंह 'संजय' के जीन ग्रन्थ- 'हिन्दी-कवि और काव्यालोचक', 'पुष्कल' (गीत संग्रह) एवं 'सोनभद्र का समाज', डा. बृजेश सिंह के ग्रन्थद्वय 'जल-पर्यावरण-समाधान' एवं 'छन्द रत्नाकर', कुंवर डा. अनन्तप्रताप सिंह परिहार 'अनन्त' कृत 'काव्योपासना', डा. शिवमंगल सिंह 'मंगल' के हाइकु-संग्रह 'बनू चन्दन', डा. लखनराम 'जंगली' की पुस्तक 'आयुर्वेद-मंजूषा', अखिलेश श्रीवास्तव 'बदनाम' के गजल-संग्रह 'परिन्दे', सी.ए. उमाशंकर तिवारी के काव्य-संग्रह 'बस इतना ही काफी है' एवं डा. प्रबोध कुमार सिंह कृत 'कर्मयोगी ज्युत नारायण' का लोकार्पण मुख्य अतिथि राम नाईक, अध्यक्ष न्यायमूर्ति पं. गिरिधर मालवीय द्वारा किया गया.

मुख्य अतिथि की आसन्दी से राज्यपाल राम नाईक ने कहा कि किताबों का खजाना ऐसा धन है, जिसे कोई लूट नहीं सकता. यहां से वे जो किताबें लेकर जा रहे हैं, वे अनमोल खजाना हैं, जिसे कोई लूट नहीं सकता. उन्होंने कहा कि उनकी उम्र अस्सी साल की हो गई है और उन्होंने पहले भी कई आयोजन किए हैं,

लेकिन आज से पहले इतनी ज्यादा संख्या में किताबों का लोकार्पण नहीं किया. देवगढ़ की ऐतिहासिकता पर सुखद आश्चर्य व्यक्त करते हुए राज्यपाल ने कहा कि ऐसी महत्वपूर्ण जगह का विस्तृत इतिहास लिखा जाना चाहिए, जिसके प्रकाशन का जिम्मा वे खुद लेते हैं.

समारोह की अध्यक्षता कर रहे न्यायमूर्ति पं. गिरिधर मालवीय ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में 'प्रभाश्री' नाम की सार्थकता व्याख्यायित करते हुए कहा कि आयोजन के संयोजक डा. जितेन्द्र कुमार सिंह 'संजय' ने बुजुर्गों के सम्मान एवं उन्हें प्रतिष्ठित रखने की परम्परा कायम रखी है. स्वागत भाषण देते हुए देवगढ़ महोत्सव के प्रधान संयोजक एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री डा. सरजीत सिंह डंग ने सोनभद्र जनपद के इतिहास-भूगोल के दुर्लभ सन्दर्भों पर विस्तृत प्रकाश डाला. वाग्देवी का संस्तवन कवयित्री विभा सिंह ने एवं स्वागत गान कविराज पं. रमाशंकर पाण्डेय 'विकल' ने किया. समारोह का संचालन प्रभाश्री ग्रामोदय सेवा आश्रम के सचिव एवं संयोजक डा. जितेन्द्र कुमार सिंह 'संजय' ने किया.

देवगढ़ महोत्सव के दूसरे सत्र में श्रीयुत दामोदर प्रधान की स्मृति को समर्पित 'अखिल

भारतीय कवि सम्मेलन' प्रख्यात गीतकार प्रो. सुमेर सिंह 'शैलेश' के मुख्यातिथ्य एवं पूर्व सांसद तथा ओज के प्रसिद्ध कवि प्रो. ओमपाल सिंह 'निडर' की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ. पं. विश्वनाथ द्विवेदी (कन्नौज), डा. बृजेश सिंह (बिलासपुर), डा. डण्डा लखनवी (लखनऊ), पं. सुधाकर शर्मा (बालाघाट), पं. उमाशंकर मिश्र 'रसेन्दु', राजेन्द्र त्रिपाठी 'लल्लू कवि' (मीरजापुर) एवं श्रीमती विभा सिंह की कल्याणी वाणी से रस की पयस्विनी प्रवाहित हुई. कवि सम्मेलन का संचालन लखनऊ से आये प्रसिद्ध कवि डा. नरेश कात्यायन ने किया. 14 मार्च को महोत्सव के तीसरे सत्र में इन्दिरा गांधी

राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के सौजन्य से 'विन्ध्य की आदिम सभ्यता एवं शैल चित्र' विषयक परिचर्चा सम्पन्न हुई.

प्रो. प्रभुनारायण मिश्र के मुख्यातिथ्य एवं कविराज पं. रमाशंकर पाण्डेय 'विकल' की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई इस परिचर्चा में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परियोजना निदेशक डा. बी.एल. मल्ला, बीरबल साहनी पुरावनस्पतिक संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. सी.एम. नौटियाल, छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्य वन संरक्षक डा. इन्द्रनाथ सिंह, पूर्व मन्त्री डा. सरजीत सिंह डंग, डा. अरविन्द कुमार मिश्र आदि ने भाग लिया.

चतुर्थ सत्र 'लोक संगीत' का आयोजन 'कलमकार संघ सोनभद्र' के सौजन्य से सम्पन्न हुआ. महोत्सव का समापन उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र से आये पचहत्तर कलाकारों की विविध प्रस्तुतियों की विविध प्रस्तुतियों के साथ सम्पन्न हुआ. देवगढ़ महोत्सव के प्रधान संयोजक डा. सरजीत सिंह डंग ने महोत्सव के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस तरह के अनुष्ठान से प्रत्येक व्यक्ति अपनी माटी से जुड़ा है. माटी की खुशबू, लोक का मनमोहक चित्र, पूर्वजों की कीर्ति-गाथा, सपूतों का सम्मान अथवा इस तरह के अनेक शीर्षकों को सम्मानित अभिधान 'देवगढ़ महोत्सव' ही हो सकता है.